मण्डली सर्प

मण्डलैर्विविधैश्चित्राः पृथवो मन्दगामिनः ।

ज्ञेया मण्डलिनः सर्पा ज्वलनार्कसमप्रभाः ।। (सु.क. 4/23)

- नाना प्रकार के मण्डलों से चित्रित ।
- भारी शरीर वाले ।
- मन्द गति वाले ।
- अग्नि-सूर्य प्रभायुक्त ।

विचरण काल

मण्डली रात्रि के पहले , दूसरे और तीसरे प्रहर .

दंश के लक्षण

मण्डलिविषेण त्वगादीनां पीतत्वं शीताभिलाषः परिधूपनं दाहस्तृष्णा मदो मूर्च्छा ज्वरः शोणितागमनमूर्ध्वमधश्च मांसानामवशातनं श्वयथुर्दंशकोथः पीतरूपदर्शन- माशुकोपस्तास्ताश्च पित्तवेदना भवन्ति ।

(सु.क. 4/37)

1. त्वचा आदि का रंग पीला पड़ना (yellowish discoloration)

2. ठण्डी वस्तुओं की अभिलाषा (craving for cold articles)

3. सारे शरीर में जलन (generalized burning sensation)

4. दाह (burning sensation - localized)

5. तृष्णा (thirst)

6. मद (intoxication)

7. मूर्च्छा (fainting)

8. ज्वर (hyperpyrexia)

9. ऊर्ध्व और अधो मार्गों से रक्तस्राव (hemorrhage)

10. मांस का अवशातन (putrefaction of muscle tissues)

11. शोथ (edema)

12. दंशस्थान का गलना (putrefaction / gangrene at the site) 13. रोगी को सभी वस्तुएँ पीली नजर आना (yellowish colored vision)

14. क्रोध शीघ्र आना (short temperedness) 15. ओष-चोषादि पित्तजन्य वेदनाएँ (pain with burning sensation etc.) ।